Jai Maa Saraswati Gyandayini
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed)
Journal home page: www.jmsjournals.in, **ISSN: 2454-8367**
Vol. 11, Issue-I, July 2025

अशोक वाजपेयी का रचना संसारः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन
(The Creative World of Ashok Vajpeyi: An Analytical Study)

Dr. Abha Gupta[a,*],

[a]*Assistant Professor (Hindi), Government Degree College, Jakhini, Varanasi, Affilliated to Mahatma Gandhi Kashi Vidyapith, Varanasi (India).*

KEYWORDS

अशोक वाजपेयी, आधुनिक हिंदी कविता, मानवीय आस्था, अस्तित्ववाद, जिजीविषा, समकालीन संवेदना।

ABSTRACT

अशोक वाजपेयी आधुनिक हिंदी कविता के प्रमुख कवियों में गिने जाते हैं, जिनकी काव्य–रचनाएँ समकालीन जीवन की जटिलताओं और मानवीय अनुभवों को गहराई से अभिव्यक्त करती हैं। उनकी कविताओं में प्रेम, जीवन के प्रति आशा और मनुष्य की जिजीविषा प्रमुख रूप से उभरकर सामने आती है। आलोचकों ने उन्हें ऐसे कवि के रूप में देखा है, जो कठिन समय में भी मानवीय संवेदना और विश्वास को बनाए रखने का प्रयास करते हैं। जिस सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश में उन्होंने लेखन किया, वह अनेक प्रकार के संकटों और बदलावों से भरा हुआ था। इस दौर में विघटन, असुरक्षा, निराशा, मोहभंग तथा पूँजीवादी व्यवस्था से उत्पन्न समस्याएँ समाज के सामने प्रमुख रूप से उपस्थित थीं।

इन परिस्थितियों का प्रभाव उस समय की साहित्यिक चेतना पर भी पड़ा, जहाँ अस्तित्ववाद से जुड़ी चिंताएँ और प्रश्न महत्वपूर्ण बनकर उभरे। अशोक वाजपेयी की कविताओं में इन परिस्थितियों का बोध तो मिलता ही है, साथ ही मनुष्य की आंतरिक शक्ति और जीवन की संभावनाओं में विश्वास भी दिखाई देता है। उनकी काव्य–दृष्टि में संवेदनशीलता, जिज्ञासा और मानवीय मूल्यों के प्रति गहरी आस्था विद्यमान है। भीड़भाड़, तनाव और प्रदूषित सामाजिक वातावरण से मुक्ति की आकांक्षा भी उनकी कविताओं में स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त होती है। इस प्रकार उनकी काव्य–यात्रा आधुनिक हिंदी कविता को नई संवेदनशीलता, विचारशीलता और मानवीय दृष्टि प्रदान करती है।

कवि अशोक वाजपेयी जी का जन्म 16 जनवरी 1941 को मध्यप्रदेश के दुर्ग नामक स्थान पर हुआ था। इन्होंने सेण्ट स्टीफेंस कॉलेज दिल्ली से अंग्रेजी विषय में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की। इन्होंने दिल्ली के दयाल सिंह कॉलेज में अंग्रेजी विषय का अध्यापन कार्य किया। कुछ समय बाद इनका चयन भारतीय प्रशासनिक सेवा आई.ए.एस. में हो गया। मध्य प्रदेश सरकार में विभिन्न पदों पर कार्य करते हुए इन्होंने कला, साहित्य, और संस्कृति क्षेत्र में कार्य किया। इन्होंने भोपाल में ''भारत भवन'' नामक बहुआयामी कला केंद्र की स्थापना की। अशोक वाजपेयी हिंदी साहित्य जगत में विगत 40 वर्षों से कविता, आलोचना, संपादन और आयोजन के क्षेत्र में सक्रिय रहे हैं। वाजपेयी जी का लेखन सन 1954–55 से प्रारंभ होता है। उनका पहला काव्य संग्रह 'शहर अब भी संभावना है' सन् 1966 में प्रकाशित हुआ। इसके 18 वर्षों बाद दूसरा 'एक पतंग अनंत में' (1984), तीसरा 'अगर इतने से'(1986), चौथा 'तत्पुरुष' (1989), पांचवां 'कहीं नहीं वही' (1991), छठां 'बहुरि अकेला' (1992), सातवाँ

Corresponding author
***E-mail:** abhagdc@gmail.com (Dr. Abha Gupta).
https://orcid.org/0009-0000-7354-0639
DOI: https://doi.org/10.53724/jmsg/v11n1.06
Received 25th April 2025; Accepted 25th June2025
Available online 30th July 2025
2454-8367/©2025 The Journal. Published by Jai Maa Saraswati Gyandayini e-Journal (Publisher: Welfare Universe). This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

आविन्यों (1995) तथा आठवाँ 'अभी कुछ और' आदि प्रकाशित हुए इन कविता संग्रहों के अतिरिक्त कवि ने इन्हीं संग्रहों की चुनिंदा कविताओं का अलग से संचयन भी किया है। जिनमें 'थोड़ी सी जगह' (1994) 'घास में दुबका आकाश' (1994), 'होना पृथ्वी ना होना आकाश' (1994), पुनरपि (1995) तथा 'तिनका–तिनका'(1996) है। कविता के अतिरिक्त कवि ने आलोचना के क्षेत्र में भी कदम रखा है। वाजपेयी जी की कई आलोचना पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं–'फिलहाल' (1970), 'कुछ पूर्वग्रह' (1984), 'समय से बाहर' (1994), 'सीढ़ियाँ शुरू हो गई हैं' (1996) संपादित पुस्तकें हैं। 'तीसरा साक्ष्य' (1979), 'साहित्य विनोद' (1982), 'कविता का गल्प' (1997) एवं 'कविता का जनपद'।

अशोक वाजपेयी समसामयिक हिंदी के एक प्रमुख कवि, आलोचक, विचारक, कला मर्मज्ञ, संपादक एवं संस्कृतिकर्मी हैं। कवि एवं आलोचक के रूप में उनका उदय बीसवीं शती के सातवें आठवें दशक में हुआ था। शती के अंतिम वर्षों में वे देश के शीर्षस्थ साहित्यकारों के बीच विशिष्ट ख्याति और प्रतिष्ठा के व्यक्ति बन गए। उनके अध्ययन, अनुशीलन, अभिरुचि एवं रचनात्मक गतिविधियों का दायरा विस्तृत है। कला, साहित्य और ज्ञान की विविध विधाओं के अतिरिक्त परंपरा और संस्कृ ति के विविध रूपों और अनुशासनों के बीच समन्वय और संवाद की कल्पनाशील जनतांत्रिक पहल के लिए वे पर्याप्त प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके हैं। लेखन और आयोजनों के द्वारा उन्होंने अनेक बार अपनी सामासिक अंतर्दृष्टि, जनतांत्रिक सोच और समावेशी उदार विनियोग–बुद्धि प्रमाणित की है।

अशोक वाजपेयी की पत्रकारिता के क्षेत्र में भी गहरी रुचि है। श्री वाजपेयी 'समवेत' (1957–58), 'पहचान' (1970–74) पूर्वग्रह (1974–1991) और 'समास' (1992) 'बहुवचन' (1999) हिंदी पत्रिकाओं और 'कविता एशिया' (1990) जैसी अंग्रेजी पत्रिका के संस्थापक संपादक हैं। मध्य प्रदेश में भारत भवन, उस्ताद अलाउद्दीन खां संगीत अकादमी, ध्रुपद केंद्र, चक्रधर नृत्य केंद्र, मध्य प्रदेश आदिवासी लोक कला परिषद आदि संस्थाओं की स्थापना और वर्षों तक संचालन के अलावा साहित्य रूपंकर कलाओं, संगीत, नृत्य, रंगमंच, पुरातल आदि से संबंधित लगभग 1000 आयोजन किए हैं, जिनमें विश्व कविता समारोह भारतीय और एशियाई कविता समारोह, कॉमनवेल्थ थिएटर प्रयोगशाला, सारंगी मेला आदि शामिल हैं।

अपने व्यक्तित्व चर्चा पर वाजपेयी जी स्वयं को एक बातूनी आदमी मानते हैं। कई साक्षात्कार में भी वह इस बात को कहते है गप लगाना तथा दोस्तों के साथ महफिलें सजाने के अलावा उन्हें कभी–कभी एकान्त भी पसन्द है। यही वजह है कि वे मानते है कि उनकी कविताओं में कभी शब्दाधिक्य तो कभी शब्द संकोच दिखलाई पड़ता है। कविता में अपने व्यक्तित्व को वाजपेयी जी अपने को संशयात्मक कवि के रूप में देखते हैं। वे लिखते हैं कि–

''यों तो कविता कवि ही लिखता है कि और इसके लिए भी जिम्मेदार है पर कोई वही जगह बिल्कुल अपनी नहीं होती कितनी ही थोडी क्यों न हो उसमें बहुतों का साझा होता है। उन पर अच्छी बुरी प्रतिक्रिया आदि। कविता एक तरह से उऋण होना भी है। मेरे जैसे कवि के यहीं ऐसे व्यक्तियों का एक लम्बा सिलसिला है जिसके कारण मैं कवि बना, बना रह गया और कविता में मेरी आस्था अडिग रही आई। यह जीवनान्त तक वैसी ही रहेगी इसमें मुझे कोई सन्देह नहीं है। इसके बिना कम से कम मेरे लिए जिजीविषा का कोई अर्थ नहीं हो सकता।''[1]

कविता जीवन के आरम्भिक दिनों में जब अशोक वाजपेयी प्रमाणिक लेखक बनने के रास्ते पर थे उस समय को याद करते है, उन्ही दिनों मैं छद बंद लिखने लगा। मेरी

पहली कविता जब मैं तेरह बरस का था तो धर्म युग में छपी जो कि शांति वांति के बारे में थी। उन्हीं दिनों सारथी में जोकि द्वारिका प्रसाद मिश्र नागपुर से निकालते थे उसमें एकाध (एक या दो) कविता छपी। उन्हीं दिनों जबलपुर से निकलने वाली पत्रिका वसुधा जो कि हरिशंकर परसाई और रामेश्वर गुरू निकालते थे. मैं मेरी आरंभिक नई किस्म की कविताएं छपी। मुझे याद है कि जब मैंने अपनी रचना वहां भेजी थी तो परसाई जी ने खाकी रंग के लिफाफे के टुकडे पर लिखकर भेजा था ''शाबास अगले अंक में जा रही है'' एक प्रकार से मैट्रिक पास करते करते एक तरह से थोड़ा बहुत परिचय हो गया था कि किस तरह का साहित्य लिखा जा रहा है। एक तरह से 16–17 बरस के होते होते अकाल परिपक्व जिसे कहते हैं, हो गया था।[2]

अशोक वाजपेयी नयी भावबोध की कविता में एक महत्वपूर्ण नाम है। कविता उनके लिए मात्र लिखने कि किसी विधा का नाम नहीं है बल्कि वह कविता को एक पूरे जीवन की तरह रेखांकित करते है। औद्योगीकरण, बाजारवाद, भूमण्डलीकरण, उपभोक्तावादी सांस्कृतिक जीवन सोच का प्रभाव वर्तमान समय में पूरे भरतीय समाज पर दिखलाई पड़ रही है। वर्तमान समय ने मनुष्य विकास के नाम पर जो विनाश की रचना कर रहा है उससे पूरे मनुष्य समाज के लिए संकट पैदा हो गया है। अतः इस संकट को दूर करना सबकी पहली प्राथमिकता है। समाज जिस गति से परिवर्तित हो रहा है वह आने वाले समय के लिए घातक दिखाई पड़ता है। अशोक वाजपेयी ऐसे कवि हदय है जो इनमें बार–बार टकराते हुए बचाने की जद्दोजहद में लगे हुए दिखाई पड़ते हैं। अशोक वाजपेयी ऐसे जुझारू कवि हैं जो देखे हुए प्रत्येक सपने को सच करने की होड़ में लगे रहते हैं। उनका काव्य संसार बहुत व्यापक है उनकी कविताओं में प्रेम, प्रकृति को भी काफी विस्तार मिला है। उसके अतिरिक्त माता–पिता, बेटी, पत्नी, प्रेमिका, कवि, चित्रकार, संगीतकार संबंधों को अपनी कविता संसार का हिस्सा बनाया है। अपने समय और समाज का बखान करने और उन्हें कविता की दुनिया में शामिल करने की चालू हिकमतों का उन्होंने लगभग एक जिद की तरह प्रतिबंध किया है। उनके यहां प्रेम और रति में, आसक्ति और जिजीविषा में, प्रकृति और भाषा में, उसमें चरितार्थ मानवीय रिश्तों में समय और समाज की अधिक सूक्ष्म प्रायः अप्रत्यक्ष और विचार–मौलिक उपस्थिति है। वाजपेयी जी के व्यक्तित्व में पाखंड का समावेश नहीं है। वे जिस बात पर यकीन करते हैं वही कविता में कहानी का साहस करते हैं। उनकी कविताओं में प्रेम कविता की संख्या अधिक होने के कारण बहुत से कवि, आलोचक इनको 'देह के कवि' या 'केलि के कवि' कहते हैं। किंतु यह आक्षेप बिल्कुल सत्य नहीं है क्योंकि वाजपेयी जी सिर्फ प्रेम पर ही नहीं समाज की इतर पर भी ध्यान रखते हैं। वाजपेयी जी का मानना है की कविता का प्रेम जीवन के प्रेम से अलग होता है। जब कभी जीवन का प्रेम असंभव हो जाता है तब भी कविता में प्रेम जीवित होता है। "समकालीन कविता से प्रेम, कामना और सहज आसक्ति को जब लगभग देश निकाला दिया जा चुका है, अशोक वाजपेयी एक बिरले कवि हैं जो प्रेम के लिए जगह की मांग और जैसे उसे हमारे लिए पुनरुपलब्ध कर रहे हैं।"[3] अशोक बाजपेयी का पहला कविता संग्रह 'शहर अब भी संभावना है' की अधिकांश कविताएं अशोक जी ने अपनी दिदिया (माता) एवं काका (पिता) को समर्पित की हैं। अशोक वाजपेयी जी की काव्य संवेदना का एक महत्वपूर्ण अंग नारी विमर्श है। उनके काव्य का विस्तार कहीं ना कहीं से नारी से जुड़ा हुआ है। नारी देह के लावण्य, सौंदर्य, निखार, संसर्ग आदि का चित्र अधिकतर कविताओं में मिलता है। 'दुख तेरे होने का' कविता बहुत मार्मिक एवं हृदय स्पर्शी है किन्तु कवि ने उसमें स्त्री

शरीर का थोड़ा प्रदर्शन कर दिया है–

"आत्मसमर्पण के क्षण में
जब तू फूट फूट कर रो उठती है
अपनी करुणा से घिरकर
तो जानती है मुझे क्या देती है तेरी आंखें
तेरे अनावृत्त उरोज और सिहरता कनक तन
एक दुख तेरे होने का
और होकर प्यार करने का
और प्यार कर समर्पित हो जाने का"।[4]

अशोक बाजपेयी का काव्य संग्रह 'एक पतंग अनंत में' प्रथम संग्रह के 18 वर्षों बाद प्रकाशित हुआ था। इस संग्रह की कविताएं मुख्यतः प्रेम और जीवनाशक्ति के बजाय मृत्यु पर आधारित है। अशोक भावुकता को नकारते नहीं है बल्कि वे उसे अपनत्व के साथ ग्रहण करने की कोशिश करते हैं। इन कविताओं में दिवंगत मां पिता, बहन, मित्र आदि की स्मृतियों की मार्मिक छवियाँ है। कवि का दिवंगत आत्माओं से गहरा लगाव है। कवि पिता को ही नहीं प्यार करता बल्कि मृत्यु के बाद उनके जूते से भी उसे लगाव है। दिदिया की मौत को कवि कभी भुला नहीं पाता है। वह हमेशा उसकी स्मृतियों में बनी रहती हैं। यह कविताएं पाठकों को शोक एवं प्रेम से आविर्भूत कर देती हैं। अशोक वाजपेयी 'मृत्यु के बाद जीवन है' में विश्वास करते हैं। उनकी कविताएं मृत्यु–बोध से बाहर निकालने की कोशिश की उम्मीद में लिखी गई हैं। यह कविताएं मृत्यु शोक को कम करके जीवन को एक नए उल्लास एवं उम्मीद के साथ जीने की प्रेरणा देती हैं। जीवन के प्रति यही उम्मीद अशोक जी की महत् उपलब्धि है–

"बच्चे फेंक रहे हैं।
एक गेंद/मृत्यु के पार
इस उम्मीद में कि पिता
वापस भेजेंगे
बच्चे उड़ा रहे हैं
एक पतंग/अनंत में
जानते हुई की मां
उसमें खिलौना लटकाकर लौटाएगी'[5]

अशोक वाजपेयी कवि से आलोचक बने।वे आलोचना कर्म की शुरूआत समीक्षा साहित्य से करते हैं। पहले इन्होंने मार्कण्डेय की कहानी 'भूदान, तथा अजित कुमार के पहले काव्य संग्रह 'अकेले कंठ की पुकार' की समीक्षा की थी। इसके पश्चात इन्होंने रघुवीर सहाय, श्रीकान्त वर्मा, साही, अज्ञेय, पन्त, विनोद कुमार शुक्ल, शमशेर बहादुर सिंह आदि की समीक्षाएं लिखी। अशोक वाजपेयी अपने एक वक्तव्य में कहते है, "कवि तो मैं जान बूझकर बना लेकिन आलोचक बैठे ठाले बन गया। मुझे लगता है कि कवि होने की आकांक्षा कितनी भी हास्यास्पद क्यों नहीं हो सकती है पर वैध मानी जाती है। पर शायद ही कभी कोई आलोचक बनने की आकांक्षा पालता हो। मुझे यह खुशफहमी है कि प्रायः सभी आलोचक बैठे ठाले ही आलोचक बन जाते है, वे भी जो बाद में रचनाकार के बजाय फिर आलोचक बने रहते है। इस सच्चाई में शायद यह पते की बात अन्तर्निहित है किसी में भी बुनियादी स्फुरण रचना का ही होता है, कि आलोचना के मूल में कहीं न कहीं जीवन भर रचना सुगबुगाती रहती है। जिस आलोचना में रचना की यह बेचौन सुगबुगाहट बाकी नहीं रहती यह जीवन्तता, गरमाहट और धारा गंवा देती है।"[6] आलोचना कर्म को वाजपेयी जी देखने दिखाने की प्रक्रिया से जोड़ते है। आलोचना का मूल धर्म है अपने समय में साहित्य का और उसके माध्यम से प्रकट मनुष्य का संघर्ष और सुख दुख में सहचर होना। आलोचना का धर्म है कि वह साहित्य उसके माध्यमों से बाहर के जीवन व्यक्ति और समाज को भी समझने समझाने का प्रयत्न करता है। अशोक वाजपेयी ने मुख्य रूप से अपनी

आलोचना में कवि और कविता को ही रखा है। गद्य पर अपने बहुत कम ही या नहीं के बराबर ही लिखा है। इसकी मुख्य वजह स्वीकारते हुए वे कहते है, ''मेरी आलोचना की एक कमी यह भी बताई जा सकती है कि मैने गद्य की कथा साहित्य की उपेक्षा कर कविता पर ही अपना आलोचनात्मक प्रयत्न एकाग्र किया है। यह सही है। पर इसके पीछे बीसवीं शताब्दी की सबसे क्रान्तिकारी घटना यानी हिन्दी गद्य को नजर अन्दाज करने की कोई संकीर्णता नहीं बल्कि उसके लिए आवश्यक तैयारी करने का समय न होना ही मुख्य कारण रहे है।"[7]

अशोक वाजपेयी कवि–आलोचक तो हैं ही, लेकिन एक सफल संपादक भी हैं। उन्होंने करीब दस से ग्यारह किताबों का संपादन किया हैं ''तीसरा साक्ष्य'' (1979), ''पुनर्वसु'' (1989), ''कुमार गंधर्व'' (1982), ''कला विनोद'' और ''साहित्य विनोद'' (1983), ''टूटी हुई बिखरी हुई'' (1990), ''कविता का जनपद'' (1992), ''अज्ञेय का संसार शब्द और सत्य'' (1993), ''जैनेन्द्र की आवाज'' (1996), ''मेरे साक्षात्कार'' (1998), ''परंपरा की आधुनिकता'' हजारी प्रसाद द्विवेदी और निर्मल वर्मा पर सफलतापूर्वक संपादन किये हैं। अपने संपादन के दौरान या प्रधान संपादक की भूमिका का निर्वाहन करते हुए बाजपेयी जी कभी भी दूसरे की भूमिका का अतिक्रमण नहीं करते है। संपादक की भूमिका उसके अधिकार क्षेत्र पर वाजपेयी जी अपने विचार देते हुए कहते है, ''मै यहाँ भी जिन पत्रिकाओं का प्रधान सम्पादक हूँ, उनमें मेरा कोई हस्तक्षेप नहीं है। हमारे युवा मित्र है, मैंने उनको चुना है। मैं उनसे कहता हूँ, अब आप तय करिये आप मुझे आकर मोटी–मोटी बात बता दीजिए कि पैटर्न क्या है। मुझे कोई सुझाव देना हुआ जैसे मैने सोचा कि पुस्तक वार्ता में हमको ये पुरानी समीक्षा जो अच्छी लगे देनी चाहिए। अब कौन सी समीक्षा चुने ये उनका काम है। मैने प्रधान सम्पादक के रूप में सिर्फ दो कर्तव्य निश्चित किए है। एक ये कि उनको पूरी सुरक्षा और स्वतंत्रता दूँ और दूसरा ये कि अगर उन पर कोई आपत्ति हो तो उसकी जिम्मेदारी में अपने ऊपर ले लूं।''[8]

अशोक वाजपेयी कविता के साथ ही अन्य रूपांकर कलाओं से प्रभावित होते रहे है। बचपन से लेकर आज तक वे लगातार कविता के साथ अन्य कला रूपों के बीच अपनी सकिय भूमिका निभा रहे है। उन्होंने लगभग 1959 से लेकर अब तक अली अकबर खाँ, मकबूल फिदा हुसैन, जगदीश स्वामीनाथन, कुमार गन्धर्व, माल्लिकार्जुन, मंसूर, सैयद हैदर रजा आदि पर कविताएं लिखी है जिसका संकलन 'उजाला एक मन्दिर बनाता है' शीर्षक से पुस्तककार प्रकाशित है। अशोक वाजपेयी जी अपने तथा कला के संबंध को जीवन के आरम्भ से ही स्वीकरते है– ''मुझे यह कहने में कभी कोई संकोच नहीं हुआ कि मेरा अपना जीवन और काव्य यत्न कलाओं के संस्पर्श के बिना महसूस किया है। यों तो उस उमर और जमाने में यानी आज से लगभग पचास बरस पहले सभी कुन्दनलाल सहगल और लता एवं मंगेशकर की नकल करते हुए गाते गुनगुनाते थे। अपने स्कूल की हस्तलिखित पत्रिका 'अनामिका' के सम्पादक के रूप में उसकी रूपसज्जा अपने एक कलाकार मित्र से करवाने की जिम्मेदारी निभाते हुए मैं अचरज करता था वे कैसे रंगों और रेखाओं से खेल लेते हैं। जबकि मैं शब्द तक ही महदूद रहा आता था। संयोगवश एक खराब कवि सम्मेलन से आकर मैंने जीवन में पहली बार एक दिग्गज शास्त्रीय गायक की संगीत सभा सुनी जिसने मेरे सामने आवाज की एक बिल्कुल अनूठी और वैभव भरी दुनिया ही खोल दी। अपनी मैट्रिक की परीक्षा के दौरान मैंने 'देवदास' नाम की फिल्म लगभग बीस बार देखी थी। स्कूल के मंच पर नाटकों में अभिनय भी किया था और मॉक संसद में नेहरू की नकल कर उनका स्वांग भी भरा था।"[9]

निष्कर्ष–

अशोक वाजपेयी का कविता और आलोचना के साथ–साथ समग्र साहित्य और कलाओं के प्रति अत्यधिक रुचि थी। अशोकजी के व्यक्तित्व का गुण है उनकी सजग चेतना, आलोचकीय कुशलता और निपुणता। आलोचना में उनकी गहरी पैठ है। मंच और अशोकजी को एक–दूसरे से अलग करके देखना लगभग असंभव–सी बात है। साहित्य और कलाओं के बारे में उनके चिन्तन और विवेक ने आज विशेष रूप से पाठक वर्ग को प्रभावित किया है। उनके संभाषणों और आलेखों में शब्दों का कहीं दुरपयोग नहीं है। उनकी भाषा में सघनता मिलती है।

सन्दर्भ

[1] अशोक बाजपेयीः पाव भर जीरे में ब्रह्मभोज, पृष्ठ–81।
[2] सुधीश पचौरीः पाठ कुपाठ, पृष्ठ– 42।
[3] ओम भारतीः अप्रैल–जून, 1989, आलोचना (त्रैमासिक), पृष्ठ–60।
[4] अशोक बाजपेयीः तिनका–तिनका–1, पृष्ठ– 52।
[5] वहीः पृष्ठ–131।
[6] अशोक वाजपेयीः पाव भर जीरे में ब्रह्म भोज, पृष्ठ– 97।
[7] वही, पृष्ठ–103।
[8] वही, पृष्ठ– 245।
[9] संपादक यतींद्र मिश्रः किस भूगोल में किस सपने मेंः अशोक बाजपेयी का गद्य, पृष्ठ– 372।